अध्याय – चतुर्थ

प्रदत्तों का विश्लेषण एवं व्याख्या

अध्याय – चतुर्थ
प्रदत्तों का विश्लेषण एवं व्याख्या

4.1 प्रस्तावनाः– संग्रहीत समंकों का सारणीयन विश्लेषण तथा प्रस्तुतीकरण आदि अनुसंधान कार्य का महत्वपूर्ण अंग है जिसे प्रयुक्त किये बिना शोध कार्य को विधिवत प्रस्तुत करना संभव नहीं है। इस **अध्याय में कक्षा 11 वीं के विद्यार्थियों की शैक्षिक आकांक्षा का अध्ययन** करने के लिए एकत्रित किये गये आँकड़ों का विश्लेषण किया गया है।

इस कार्य को करने हेतु 7 उद्देश्यों का निर्माण किया गया जिसमें पहला उददेश्य यह है कि कक्षा 11 वीं के विद्यार्थियों की शैक्षिक आकांक्षा के स्तर का अध्ययन करना इसीलिए इस उददेश्य की पूर्ति हेतु विद्यार्थियों की शैक्षिक आकांक्षा का स्तर ज्ञात करने का प्रयास किया गया जिसका विवरण तालिका के माध्यम से प्रस्तुत है–

तालिका क्रमांक –4.1 परीक्षण से प्राप्त परिणामों को निम्नलिखित तालिका मे प्रदर्शित किया गया है,–

अंक श्रेणी	विवरण	विद्यार्थियों की संख्या	प्रतिशत (%)
60–74	अति उच्च	4	2.22
45–59	उच्च औसत	22	12.22
32–44	औसत	143	79.44
15–29	निम्न औसत	11	6.11
0–14	क्मजोर	0	0

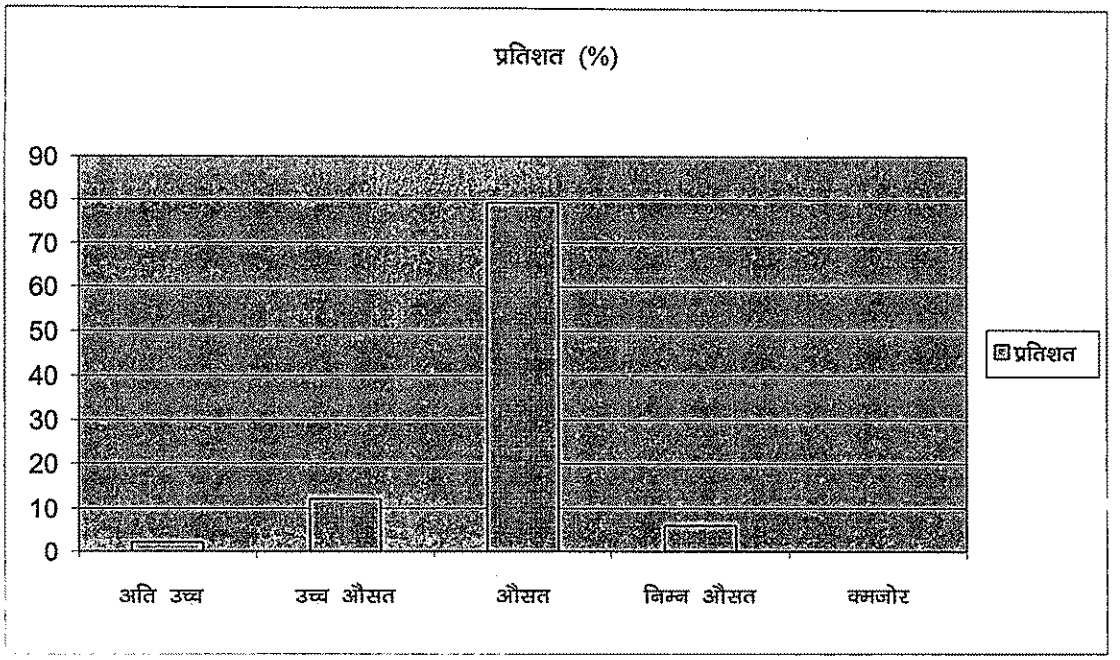

उपर्युक्त तालिका से स्पष्ट होता है, कि कुल न्यायदर्श 180 विद्यार्थियों में से 143 विद्यार्थियों (80%) का आकांक्षा स्तर औसत पाया गया, 22 विद्यार्थियो (12.12%) की आकांक्षा का स्तर औसत से ऊपर पाया गया, 4 विद्यार्थियों (2.22%) का आकांक्षा स्तर अति उच्च पाया गया तथा 11 विद्यार्थी (6.11%) विद्यार्थियों का शैक्षिक आकांक्षा स्तर औसत से कम पाया गया। अर्थात यह स्पष्ट होता है, कि प्रायः विद्यार्थियों की शैक्षिक आकांक्षा का स्तर औसत होता है, किन्तु इस स्तर को प्रभावित करने वाले अनेक कारक हो सकते है, जिनमें विद्यालय प्रबन्धन भी एक है। शोध कार्य का एक उद्देश्य विद्यालय प्रबन्धन के आधार पर शैक्षिक आकांक्षा का स्तर ज्ञात करना है, जिसके परीक्षण के लिए अधोलिखित परिकल्पना का निर्माण किया गया।

परिकल्पना – 1. विद्यालय प्रबंधन के आधार पर विद्यार्थियों की शैक्षिक आकांक्षा में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

तालिका क्रमांक – 4.2 विद्यालय प्रबंधन के आधार पर विद्यार्थियों की शैक्षिक आकांक्षा स्तर को दर्शाने वाली तालिका–

क्रमांक.	विद्यालय प्रबन्धन	विद्यार्थियों की संख्या	मध्यमान	प्रमाणिक विचलन	"टी" मुल्य
1.	शासकीय	90	37.24	20.56	0.59
2.	निजी	90	39.12	21.63	

उपर्युक्त तालिका से स्पष्ट होता है कि विद्यालय प्रबन्धन के आधार पर शासकीय विद्यालय के विद्यार्थियों की संख्या 90 है, मध्यमान 37.24 तथा प्रमाणिक विचलन 20.56 पाया गया, और निजी विद्यालय के विद्यार्थियों की संख्या 90 मध्यमान 39.12 तथा प्रमाणिक विचलन 21. 63 पाया गया।

स्पष्ट है, कि विद्यालय प्रबन्धन के अन्तर्गत शासकीय तथा निजी विद्यालय के विद्यार्थियों की शैक्षिक आकांक्षा स्तर के मध्यमान में अन्तर पाया गया। लेकिन 'टी' का मान 0.59 है जो कि 0.05 स्तर (1.96) से कम है, जो कि यह दर्शाता है, 0.05 स्तर पर यह मूल्य सार्थक नहीं हैं। इसलिए परिकल्पना को स्वीकृत किया गया। अर्थात शासकीय एवं निजी विद्यालय के विद्यार्थियों की शैक्षिक आकांक्षा में कोई सार्थक अन्तर नही पाया गया। समान्यतः यह धारणा प्रचलित है, कि शासकीय विद्यालयों में अध्ययनरत् विद्यार्थियों कि अपेक्षा निजी विद्यालयों के विद्यार्थियों की आकांक्षा का स्तर उच्च होता है, किन्तु उक्त परीक्षण से स्पष्ट होता है, कि विद्यालय प्रबन्धन छात्रों के आकांक्षा स्तर में अन्तर हेतु उत्तरदायी नहीं है। किन्तु रूढ़िवादी भारतीय पारिवारिक वातावरण के आधार पर समाज मे चिन्तन है, कि लड़को को लड़कियों से अधिक सुविधाएँ, अवसर और महत्व दिये जाने के कारण उनकी 'शैक्षिक आकांक्षा का स्तर उच्च होता है, इस धारणा के परीक्षणार्थ यह परिकल्पना निर्मित कि गई।

परिकल्पना – 2 लिंग के आधार पर विद्यार्थियों की शैक्षिक आकांक्षा में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

तालिका क्रमांक –4.3 लिंग के आधार पर विद्यार्थियों की शैक्षिक आकांक्षा स्तर को दर्शाने वाली तालिका–

क्रमांक	लिंग	विद्यार्थियों की संख्या	मध्यमान	प्रमाणिक विचलन	"टी" मान
1.	छात्र	52	39.92	21.88	0.68
2.	छात्राएँ	128	37.48	20.81	

उपर्युक्त तालिका से स्पष्ट होता है, कि लिंग के आधार पर छात्रों की संख्या 52 तथा मध्यमान 39.92 तथा प्रमाणिक विचलन 21.88 है, और छात्राओं की संख्या 128, मध्यमान 37.48 तथा प्रमाणिक विचलन 20.81 पाया गया। परिणाम बताते है, कि लिंग के आधार पर छात्र एवं छात्रों की शैक्षिक आकांक्षा के मध्यमान में अन्तर पाया गया। लेकिन 'टी' का मान 0.68 है, जो कि 0.05 स्तर (1.96) से कम है, अतः 0.05 स्तर पर यह मूल्य सार्थक नही पाया गया। इसलिए परिकल्पना को स्वीकृत किया गया। सांख्यिकी परिणाम इस पूर्वाग्रह को असत्य सिद्ध करते है, कि लिंग के आधार पर शैक्षिक आकांक्षा स्तर मे अंतर होता है, क्योकि बदलते सामाजिक परिवेश और शिक्षा के प्रभाव ने लडके– लडकियों के बीच भेद–भाव दृष्टि को कम किया है, आम धारणा है, कि उच्च श्रेणी प्राप्त करने वाले छात्र उच्च आकांक्षा स्तर वाले होते है, अतः विद्यार्थियों कि शैक्षणिक श्रेणी के आधार पर शैक्षिक आकांक्षा स्तर जानने के लिए निम्न परिकल्पना का निर्माण किया गया।

परिकल्पना – 3 शैक्षणिक श्रेणी के आधार पर विद्यार्थियों की शैक्षिक आकांक्षा में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

तालिका क्रमांक – 4.4 शैक्षणिक श्रेणी के आधार पर विद्यार्थियों की शैक्षिक आकांक्षा स्तर को दर्शाने वाली तालिका–

क्रमांक	श्रेणी	विद्यार्थियों की संख्या	मध्यमान	प्रमाणिक विचलन	"टी" मान
1.	प्रथम	99	39.5	21.27	0.97
2.	द्वितीय	81	36.58	21.12	

उपर्युक्त तालिका से स्पष्ट होता है, कि शैक्षणिक श्रेणी के आधार पर प्रथम श्रेणी के विद्यार्थियों की संख्या 99 है, मध्यमान 39.5 तथा प्रमाणिक विचलन 21.27 पाया गया इसी प्रकार द्वितीय श्रेणी के विद्यार्थियों की संख्या 81 मध्यमान 36.58 तथा प्रमाणिक विचलन 21. 12 पाया गया, अतः शैक्षणिक श्रेणी के आधार पर विद्यार्थियों की 'शैक्षिक आकांक्षा के मध्यमान में अन्तर पाया गया लेकिन जब 'टी' मान निकाला गया जिसका परिकलित मान 0.68 है, जो कि 0.05 स्तर (1.96) से कम है अतः 0.05 स्तर पर यह मूल्य सार्थक नही है, इसलिए परिकल्पना को स्वीकृत किया गया। जो कि यह बताता है, कि केवल परीक्षाओं मे उच्च श्रेणी प्राप्त कर लेना ही व्यक्ति की आकांक्षा स्तर को उच्च नहीं बनाता अपितु आज तकनीकी एवं संचार के युग मे प्रायः हर छात्र अपनी रूचि के क्षेत्र में उपलब्ध सम्भावनाओं और मार्ग से परिचित है, इस कारण उसके मन में भी उन लक्ष्यों को प्राप्त करने हेतु उच्च आकांक्षा तो है, भले ही विद्यालयीन परीक्षाओं मे उसकी श्रेणी निम्न है, इस निम्न श्रेणी के कई कारण हो सकते है। जोकि एक भिन्न शोध का विषय है। यहॉ शोधार्थी का मत यह है, कि निम्न शैक्षिक श्रेणी प्राप्त छात्र में भी यदि शैक्षिक आकांक्षा स्तर उच्च है, तो यह विद्यालय, शिक्षक और अभिभावक का दायित्व है, कि उसे अवसर उपलब्ध कराये जायें, कक्षा दसवीं मे प्राप्त श्रेणी का प्रभाव यदा–कदा विषय चयन पर पड़ता है, माना जाता है, कि विज्ञान संकाय के विद्यार्थियों का शैक्षिक आकांक्षा स्तर उच्च होता है, इस तथ्य के परीक्षण हेतु निम्नलिखित परिकल्पना का निर्माण किया गया।

परिकल्पना – 4 विभिन्न संकाय के आधार पर विद्यार्थियों की शैक्षिक आकांक्षा में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

तालिका क्रमांक –4.5 विभिन्न संकाय के आधार पर विद्यार्थियों की शैक्षिक आकांक्षा स्तर को दर्शाने वाली तालिका–

क्रमांक	विषय	विद्यार्थियों की संख्या	मध्यमान	प्रमाणिक विचलन	"टी" मान
1.	विज्ञान	120	38.52	21.12	0.30
2.	वाणिज्य	60	37.5	21.14	

उपर्युक्त तालिका से स्पष्ट होता है, कि संकाय के आधार पर विज्ञान के विद्यार्थियों की संख्या 120 है, मध्यमान 38.52 तथा प्रमाणिक विचलन 21.12 पाया गया इसी प्रकार वाणिज्य के विद्यार्थियों की संख्या 60 मध्यमान 37.5 तथा प्रमाणिक विचलन 21.14 पाया गया, अतः संकाय के आधार पर विद्यार्थियों की 'शैक्षिक आकांक्षा के मध्यमान मे अन्तर पाया गया लेकिन जब 'टी' मान निकाला गया जिसका परिकलित मान 0.30 है, जो कि 0.05 स्तर (1.96) से कम है अतः 0.05 स्तर पर यह मूल्य सार्थक नही है, इसलिए परिकल्पना को स्वीकृत किया गया। क्योकि आज न केवल विज्ञान में अपितु कला एवं वाणिज्य इत्यादि समस्त क्षेत्रों में उच्च अवसर उपलब्ध है, अतः हर सकांय में उच्च शैक्षिक आकांक्षा स्तर वाले विद्यार्थी प्राप्त होते है। सोचा जाता है, कि अभिभावकों का व्यवसाय कई बार बचपन से ही बच्चों मे भविष्य के लक्ष्य का आदर्श प्रस्तुत कर देता है, जिसके आधार पर उनकी शैक्षिक आकांक्षा स्तर का निर्माण होने लगता है, गौतम (1961) द्वारा किए गए अध्ययन ने भी इस तथ्य की पुष्टि कि है, किन्तु रोबर्ट (1988) ने अपने अध्ययन में यह सिद्ध किया कि अभिभावकों के व्यवसाय से छात्रों कि 'शैक्षिक आकांक्षा का कोई सम्बन्ध नहीं होता है, और इसी विरोधाभास के परीक्षण के लिए शोधार्थी द्वारा यह परिकल्पना निर्मित कि गई जिनके परीक्षण हेतु व्यवसायों कों तीन श्रेणियों मे विभाजित किया गया। जो निम्न है, 1. शासकीय/निजी 2. कर्मचारी 3. मजदुरी

परिकल्पना –5 अभिभावकों के व्यवसाय के आधार पर विद्यार्थियों की शैक्षिक आकांक्षा में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

तालिका क्रमांक –4.6 अभिभावकों के व्यवसाय के आधार पर विद्यार्थियों की शैक्षिक आकांक्षा स्तर को दर्शाने वाली तालिका–

क्रमांक	अभिभावकों का व्यवसाय	विद्यार्थियों की संख्या	मध्यमान	प्रमाणिक विचलन	"एफ" मान
1.	शासकीय/निजी कर्मचारी	91	38.659	8.201	.389
2.	व्यापार	29	37.344	7.335	
3.	मजदुरी	60	37.866	7.293	

उपर्युक्त तालिका से स्पष्ट होता है, कि व्यवसाय के आधार पर जिनके अभिभावक 'शासकीय तथा निजी कर्मचारी है, उन विद्यार्थियों की संख्या 91 है, तथा मध्यमान 38.659 तथा प्रमाणित विचलन 8.201 है, इसी प्रकार जिनके अभिभावक व्यापार करते है, उन विद्यार्थियों की संख्या 29 है, मध्यमान 37.344 तथा प्रमाणित विचलन 7.335 है, इसी प्रकार जिनके अभिभावक मजदुरी करत है, उन विद्यार्थियों की संख्या 60 है, मध्यमान 37.86 है, प्रमाणित विचलन 7.293 अतः तीनों ही समुह वाले विद्यार्थियों की संख्या शैक्षिक आकांक्षा के मध्यमान में अन्तर पाया गया। लेकिन यह परीक्षण करने पर एफ का मान .389 है, जो कि 0.01 (4.71) स्तर के मूल्य पर यह सार्थक नही है, अतः परिकल्पना को स्वीकृत किया गया। इसलिए रोबर्ट द्वारा किए गए अध्ययन के निष्कर्ष कि संपुष्टि होती है, किन्तु अभिभावकों कि मासिक आय भी विद्यार्थियों की शैक्षिक आकांक्षा में अन्तर उत्पन्न कर सकती है, अतः 'शोधार्थी द्वारा आय के तीन स्तरों का निर्धारण कर परीक्षण किया गया। यह स्तर निम्नलिखित है, 5000 रूपये से कम, 5000 रू. से 10000 रू. तक, तथा 10000 से अधिक इस आय के स्तर के आधार पर 'शैक्षिक आकांक्षा स्तर कि जॉच हेतु निम्नलिखित परिकल्पना का निर्माण किया गया।

परिकल्पना –6 अभिभावकों की मासिक आय के आधार पर विद्यार्थियों की शैक्षिक आकांक्षा में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

तालिका क्रमांक –4.7 अभिभावकों की मासिक आय के आधार पर विद्यार्थियों की शैक्षिक आकांक्षा स्तर को दर्शाने वाली तालिका–

क्रमांक	अभिभावकों की मासिक आय	विद्यार्थियों की संख्या	मध्यमान	प्रमाणिक विचलन	"एफ" मान
1.	पॉच हजार रूपये से कम	84	38-309	7-97	1.070
2.	पॉच हजार रूपये से दस हजार तक	54	36.37	7.08	
3.	दस हजार रूपये से अधिक	42	40.26	7.72	

उपर्युक्त तालिका से स्पष्ट होता है, कि जिनके अभिभावको की आय 5000/– से कम है, उन विद्यार्थियों की संख्या 84 मध्यमान 38.309 तथा प्रमाणिक विचलन 7.97 है, तथा जिनके अभिभावकों की आय 5000/– से 10000/– रू. है, उन विद्यार्थियों की संख्या 54 मध्यमान 36.37 तथा प्रमाणिक विचलन 7.08 है, और जिनके अभिभावकों की मासिक आय 10000/– रू. से अधिक है, उन विद्यार्थियों की संख्या 42 मध्यमान 40.26 तथा प्रमाणिक विचलन 7.72 पाया गया। अर्थात अभिभावकों कि आय का स्तर उच्च या निम्न होने पर भी छात्रों कि 'शैक्षिक आकांक्षा स्तर अप्रभावित रहता है,

निष्कर्ष– यह निष्कर्ष निकलता है कि विद्यार्थियों की शैक्षिक आकांक्षा पर किसी भी प्रकार के कारकों का प्रभाव नही पड़ता है उनकी आकांक्षाएँ स्वतन्त्र होती है।